बी.ए. हिन्दी (प्र०) खण्ड-द्वितीय पत्र-तृतीय

। डॉ० संतोष कुमार ।

हिमाद्रि-तुंग शृंग से

V.V.9

हिमाद्री-तुंग शृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती—
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला
स्वतंत्रता पुकारती—
अमर्त्य वीरपुत्र हो, दृढ-प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है- बढ़े चलो, बढ़े चलो ॥

शब्दार्थ :- हिमाद्री - हिमालय, तुंग - ऊँचे पर्वत, शृंग (शृंग) - पर्वत की चोटी, प्रबुद्ध - जगा हुआ, पंडित, शुद्ध - निर्मल, दोषरहित, पवित्र, भारती - सरस्वती, भारतीय (चु.) स्वयं - आप से आप, प्रभा - चमक समुज्ज्वला - पूर्णत: उज्ज्वलता, अमर्त्य - अमर, जो कभी न मरता हो, दृढ-प्रतिज्ञ - अटल/पक्का शपथ लेने वाले. प्रशस्त - विशाल, भव्य, उत्तम,

प्रस्तुत पंक्ति 'हिमाद्रि-तुंग शृंग से' काव्य का प्रारंभिक अंश है। वास्तव में, यह काव्य जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटक 'चंद्रगुप्त' के चतुर्थ अंक (छठे दृश्य) में वर्णित है। यह एक प्रयाणगीत है जो नाटक में अलका (तक्षशिला की राजकुमारी) द्वारा तक्षशिला के नागरिकों के साथ समवेत स्वर में गाया जाता है। राजकुमारी अलका भारत को यूनानियों से पददलित होते नहीं देख पाती है। नागरिकों में देश-प्रेम की भावना जगाने एवं यूनानियों का मुकाबला करने के लिए प्रेरित करना ही इस गीत का उद्देश्य है। वह अत्यंत ही ओजपूर्ण भाषा में भारतवासीयों को ललकार कर कहती है—

हे देशवासियों ! आज हिमालय की ऊँची चोटी से स्वयं प्रकाशित स्वतंत्रता देवी जाग्रत पवित्र पवित्र वाणी में पुकार-पुकार कर तुम्हें कह रही है कि तुम अमर वीरों की संतान हो। अत: दृढ़ निश्चयपूर्वक यह सोच लो कि तुम्हें इस राष्ट्र सेवा के पुण्य पंथ पर बढ़ते जाना है। देश की मर्यादा की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाना ही तुम्हारा एक मात्र कर्तव्य है। इससे बढ़कर दूसरा कोई पुण्य कार्य नहीं है।

—